Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

December-2021

ISSUE No- (CCCXXIX) 329- C

WOMEN'S STATUS : PROBLEMS & SOLUTIONS

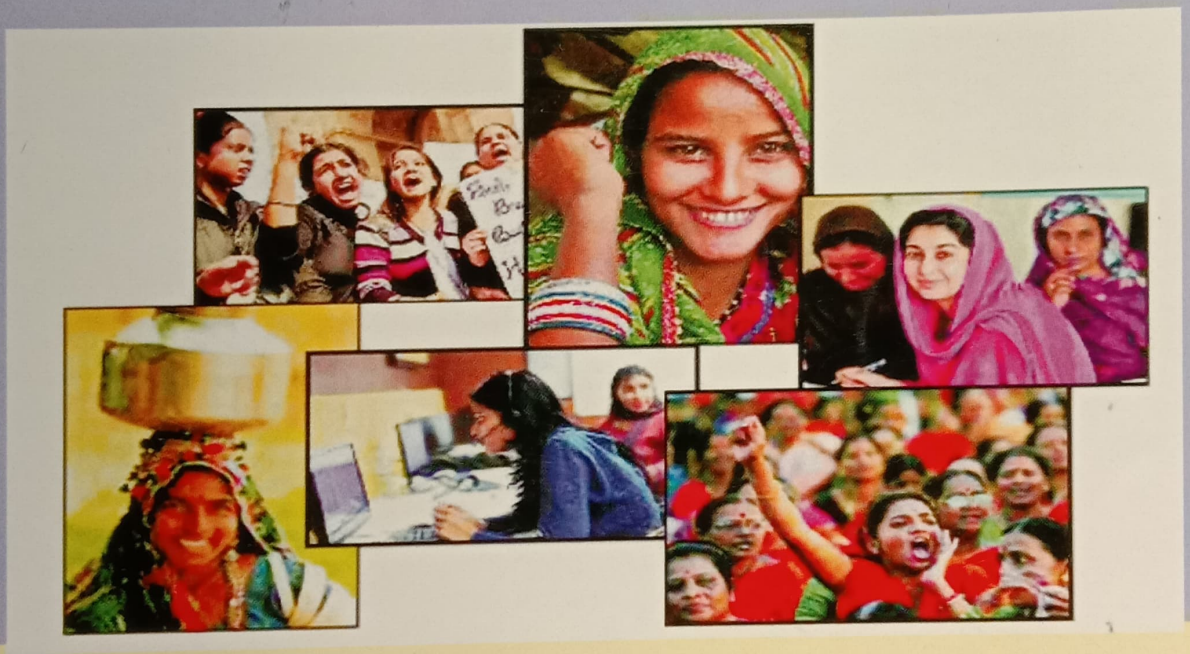

Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor

Dr. Shikha khare
Head, Department
of Home Science
Nehru Gram Bharati Deemed to be University,
Prayagraj Uttar Pradesh

Editor

Dr. Baliram Pawar
Head, Department of Sociology
Mahatma Phule Mahavidyalaya
Kingaon Latur Maharashtra

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, 329 (CCCXXIX) C

ISSN : 2278-9308
December, 2021

22	भारतीय संविधान व महिला सशक्तीकरण : एक विश्लेषण डॉ० रविता सिंह	105
23	विकास धोरणातील नाशिक जिल्ह्यातील आदिवासी महिला सक्षमीकरणाची स्थिती व वास्तवता प्रा. डॉ. वाल्मिक धुडकु इंदासे	110
24	कामकाजी महिलाओं की भूमिका संघर्ष के बीच सशक्तिकरण डॉ कुलकर्णी वनिता बाबुराव	118
25	महिलांची सामाजिक आणि आर्थिक स्थिती डॉ.राजेश्री अप्पाराव जाधव	123

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –7.675,Issue NO, 329 (CCCXXIX) C
ISSN : 2278-9308
December, 2021

कामकाजी महिलाओं की भूमिका संघर्ष के बीच सशक्तिकरण

डॉ कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिंदी विभागाध्यक्षा कै.रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनपेठ. ता.सोनपेठ जि. परभणी
पिन कोड -431516 ,दूरभाष -94 2313 8878 मेल-kulkarnivanita02@gmail.com

प्रस्तावना

वर्तमान युग में कामकाजी महिलाएंँ बदलते हुए वैश्विक दौर में समय के साथ बदलते परिवेश के साथ अपना सामंजस्य करने में सक्षम हो रही है। सरकारी या निजी कार्यस्थल व घर के काम में अपने प्रबंधन की भूमिका बखूबी से निभाती है। आधुनिक युग में महिलाएं कामकाजी होने के साथ-साथ सफल गृहणियाँ भी सिद्ध हो रही है। लेकिन कभी किसी ने ध्यान नहीं दिया होगा कि महिलाएं किस प्रकार सभी कार्यों का समायोजन करती होगी।

प्राचीन काल से महिलाएं प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं एवं कृषि कार्य में संलग्न रही है। धीरे-धीरे शिक्षा का विकास होने लगा नवीन तकनीकी प्रकाश से पुरुषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं भी आगे आने लगी ।भारत में औसतन प्रत्येक घर की महिलाएं घर के बाहर या घर पर कुछ ना कुछ आयार्जन करने में लगी है ।साथ-साथ अपने निजी जीवन को भी गतिशील रखने के प्रयास करती है। कामकाजी महिलाएं अपने परिवार और अपने भविष्य को संवारने के लिए कार्य करती है। महिला शिक्षा के बढ़ते स्तर ने महिलाओं को कामकाजी होने की प्रेरणा दी है, आज वह सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान पदों पर आसीन हैं। सामाजिक क्षेत्र हो या राजनीतिक सत्ता का क्षेत्र हो या आई.ए.एस. ऑफिसर की कुर्सी अभिनय की अभिव्यक्ति हो या नृत्यांगना का नृत्य साहित्य का क्षेत्र ललित कला, आंगन, राग- रागिनीयाँ की सरगम हो या चित्रकारी कि चीतेरी चिकित्सक या कानूनी सलाहकार प्रशासक का क्षेत्र हो या शिक्षिका प्रोफेसर का दायित्व, ज्ञान-विज्ञान हो या कलात्मक प्रस्तुति महिलाओं के कामकाज का विस्तार सभी क्षेत्रों में हुआ है। कामकाजी महिलाएं अपनी योग्यता से ना केवल धन अर्जित करती है अपितु वे अर्जित धन से पारिवारिक आर्थिक संरचना संरचना में अपना योगदान देकर आर्थिक संबल प्रदान करती है। महिलाओं का आर्थिक उपार्जन आर्थिक क्षेत्र में उनकी आत्मनिर्भरता को प्रदर्शित करता है।

महिलाओं को प्रायः माना जाता है कि पद पर आसीन कामकाजी महिलाएंँ सुख संपत्ति का स्वामित्व होता है। कामकाजी महिलाओं का कामकाजी होना उनके लिए सदा एवं प्रसन्नता का विषय नहीं होता है। कार्यक्षेत्र का दायित्व घर में परिवार एवं बच्चों के दायित्व के साथ कामकाजी महिलाओं पर अन्य अनेक दायित्व भी होते हैं। कामकाजी महिलाओं की भूमिका संघर्ष के बीच सशक्तिकरण—

नारी ईश्वर की एक ऐसी कृति है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी में मातृत्व का गुण है। नारी पुरुष की प्रतिद्वंद्वी नहीं अपितु पुरुष की पूरक व सहयोगी है। आज महिलाएं विश्व पटल पर अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, अथक परिश्रम व अद्भुत साहस के साथ अपनी पहचान बनाने

में सफल हुई है। उसमें अथाह शक्ति व क्षमताएं विद्यमान है। आज विश्व स्तर पर कामकाजी महिलाएं घर वह बाहर दोहरी भूमिका निभा रही है।

स्वतंत्रता एवं समानता के संवैधानिक अधिकारों, बढ़ती हुई जनसंख्या, महिलाओं में बढ़ती हुई जागरूकता एवं शिक्षा तथा सुविधाओं के साधनों की मांग ने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। आज महिला लगभग सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। जिससे उनकी परिस्थिति मैं परिवर्तन आ रहा है इस परिस्थिति के साथ भूमिका निर्वहन में वह अनेक कठिनाइयों का सामना कर रही है।

कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग प्राया नौकरी करने वाली महिला के संदर्भ में किया जाता है। अर्थात वे महिलाएंॅ जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक व व्यवसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती है। काम करने का अर्थ स्वयं काम करना ही नहीं, वरना दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन आदि देना भी सम्मिलित है।

भारत में 1951 से 1911 के बीच 70 वर्षों में महिलाओं की स्थिति में युगांत कारी परिवर्तन आया है। इस समय भारत में स्त्री शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ । स्त्रियों ने बुनियादी शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा को भी ग्रहण किया है। 2011 की जनसंख्या के अनुसार देश में स्त्रियों की साक्षरता का प्रतिशत 65. 46 तथा पुरुषों में 82.14 है जिस में पर्दा प्रथा बाल विवाह आदि कुरीतियों का प्रचलन कम हुआ है और सामाजिक जीवन मैं महिलाओं की सहभागिता में निरंतर वृद्धि हुई है।

भारतीय समाज में महिलाओं की संघर्षपूर्ण जीवन शैली का मूल्यांकन उनकी पारिवारिक भूमिका दायित्व में ही संभव है। परिवार में महिलाओं की भूमिका माँ एवं पत्नी के रूप में महत्वपूर्ण होती है। परिवर्तनों के बावजूद महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए परंपरागत लैंगिक समानता का भी सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाएंॅ उच्च जीवन स्तर एवं अपने जीवन से संतुष्ट होती है। उन्हें ना संकट का सामना करना पड़ता है और ना किसी प्रकार के संघर्ष का वह मानसिक दबाव से मुक्त होती है। यह एक भ्रमपूर्ण धारना है। जीवन के किसी भी पहलू का वर्तमान भौतिक, सामाजिक, सांस्कृति, में कोई न कोई स्थिति बनती है। जहाँ वे भूमिका संघर्ष का सामना करती है । थोडडी या कम मात्रा में भूमिका संघर्ष जीवन से जुड़ा है। कामकाजी महिलाओं की स्थिति में बाह्य अवलोकन के साथ आंतरिक पहलू भिन्न होता है। कोई भी व्यक्ति अपनी भूमिका निर्वाह में परिपूर्ण नहीं होता है। काम के दौरान कुछ ना कुछ ऐसा घट ही जाता है, कुछ काम ऐसे ही आसानी से हो जाते हैं, और कुछ उपेक्षित रह जाते हैं। जिन्हें पूर्ण करना भी उनके लिए आवश्यक होता है। कामकाजी संघर्ष की भी होती वे अपनी विभिन्न भूमिका में किसे पहले करें और किसे बाद में संघर्ष बना रहता है।

मानव संसाधन का आधा हिस्सा महिलाएंॅ हैं। यह एक प्रकार से देश की राजनीतिक आर्थिक संप्रभुता एवं संपदा की बराबरी की हिस्सेदार है। अतः देश की प्रगति का आकलन करने के लिए उन सभी के सकारात्मक परिवर्तन को देखना आवश्यक होता है, जो देश के मानव संसाधनों की सूची में दर्शित है। यद्यपि संविधान ने भी सभी को समानता का अधिकार दिया है और जाति, धर्म, रंग, जन्म स्थान के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है। अतः स्पष्ट है कि भारत में राजनीतिक क्षेत्र में महिला पुरुष को सहभागी रूप में

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Gondpipri Dist. Chandrapur

समान अधिकार प्राप्त है।"1 "भारतीय नारी की सार्वजनिक जीवन एवं राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी का परिणाम है कि स्त्री-पुरुष संबंधों से जुड़े अनेक सामाजिक मुद्दों पर बहुत ही कम ध्यान दिया गया है।"2 लोकतंत्र के सफल संचालन एवं लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने के लिए " सरकार सभी राजनीतिक दल समाज के अभिजन वर्ग, सभी बुद्धिजीवी वर्ग का यह दायित्व है कि महिलाओं के शैक्षिक स्तर का ऊन्नयन करें। सामाजिक, पारिवारिक जीवन में महिलाओं की बड़ी महती भूमिका है।"3 आज के समाज में महिलाएंँ सिर्फ लाभ की दृष्टि से उद्यान नहीं करती है वरना अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करके समाज में प्रतिष्ठा स्वतंत्र रहने की चाहता तथा स्वावलंबी बनने के उद्देश्य से भी उद्यम करना चाहती है। जिसका परिणाम कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घर के सदस्यों को उनके उद्यम करने पर परेशानी होने लगती है। प्रमिला कपूर के अध्ययन से पता चलता है कि "कामकाजी महिलाओं को स्वयं के द्वारा अर्जित धन को खर्च करने की स्वतंत्रता नहीं होती है। उन्हें यह धन घर के सदस्यों को दे देना पड़ता है। न देने पर कलह या तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।"4

दुबे का कथन है "महिलाओं की प्रासंगिक आर्थिक स्वतंत्रता के प्रति प्रगति को बहुत से पुरुष उभयभावी भी शामिल है। एक कामकाजी पत्नी आर्थिक रूप से उपयोगी है, यदि वह उच्च पद पर काम करती है तो उसकी एक विशेष सामाजिक परिस्थिति भी है, लेकिन उसका दूसरे लोगों के साथ विशेषकर पुरुषों के साथ मिलना जुलना उचित नहीं समझा जाता। बाहर के कार्यो के कारण उसके व्यस्त रहने से परंपरागत घरेलु दायित्वों की कुछ अवहेलना होती है और उसकी इस अवहेलना के कारण प्रतिकूल प्रतिक्रिया दिखाई देती है। कामकाजी महिलाएं स्वयं भी अपनी दोहरी भूमिका के निर्वाह में कठिनाई अनुभव करती है। और इनमें से कुछ तो अपनी नई भूमिका के कुछ पुरुषोचित पहलुओं से पूरी तरह प्रसन्न नहीं है।" 5

मातृत्व एक पूर्णकालिक कार्य है। कामकाजी महिलाएं जब कार्य के लिए घर से बाहर जाती है तो उसकी प्रथम वरियता अपने बाहर के कार्यों को ठीक प्रकार से करने की होती है। इस भूमिका को वरियता देने से बच्चों की देखभाल उचित तरीके से नहीं कर पाती।परिवार के सदस्य जब बच्चों की देखभाल में उनकी सहायता नहीं करते हैं तो संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे वह पूर्ण रुप से अपने कार्य व बच्चों के बीच सामंजस्य बिठाने में असमर्थ रहती है। सामाजिक वर्ग चाहे कोई भी क्यों न हो हर वर्ग में यह एक विश्वास है कि, महिला की नौकरी को पत्नी तथा माता की बुनियादी भूमिका में हस्तक्षेप या उसके साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिए। रानी कला के अपने अनेक अध्ययन में बताया है कि," कैसे कार्य करने वाली महिलाएं घर एवं बाहर की जिम्मेदारी को निभाती है और कैसे दोनों अवस्थाओं के कारण संघर्ष उत्पन्न होता है। अधिकतर महिलाएं अपनी पुरानी व्यवस्था पर जोर देती है । उनका मत है कि आवश्यकता पूर्ति हेतु जो स्त्री कार्याजन में आती है वह अधिक संघर्ष झेलती है यह अपने बच्चों घर परिवार के बारे में अधिक चिंतित रहती है" 6 महिला सशक्तिकरण—

स्त्री को सृजना की शक्ति माना जाता है ।

अर्थात रिश्ते ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सरजन की शक्ति को विकसित परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय ,विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता अवसर की

Late Ramesh Warpud College Sonpeth Dist. Parbhani

समानता का सुअवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण का आशय है। महिला सशक्तिकरण का आयाम नारी के अपने अधिकार सम्मान एवं योग्यता में संवर्थन की ओर अग्रसर करना है। महिलाओं को घर और बाहर दोनों में सुरक्षित करना है। जिससे उन्हें जागरुक कर शक्तिशाली बनाया जा सके। " महिला सशक्तिकरण की राष्ट्रीय नीति का उद्देश्य महिलाओं की प्रगति विकास एवं आत्म शक्ति को सुनिश्चित करना है।"7 महिला सशक्तिकरण महिलाओं को मजबूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है। " नारी की भूमिका के प्रसार से केवल बालिकाओं एवं वयस्क महिलाओं के कुशलक्षेम में सुधार नहीं आता, यह सारे समाज में व्याप्त अभाव के निराकरण में सहायक होता है।"8 इक्कीसवी सदी नारी जीवन में सुखद संभावनाओं की सदी है। महिलाएं अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी है। आर्थिक, राजनीतिक, कानूनी सशक्तिकरण आदि के द्वारा महिलाओं का विकास करना है। और इन सब के लिए महिलाओं में ज्ञान आत्मविश्वास, शिक्षा आदि की तीव्र गति से वृद्धि करनी होगी। जिससे महिला कल्याण कार्यक्रमों में तेजी आ सके। "महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं का कल्याण एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसके बिना महिला सशक्तिकरण संभव नहीं हो पाएगा।"9 महिला सशक्तिकरण का मुख्य पक्ष स्त्रीयों के अस्तित्व का अधिकार और समाज द्वारा उनकी स्वीकार्यता है। " प्रोग्राम आफ एक्शन 1992 में महिला सशक्तिकरण को सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रमुख माना गया है। सामूहिक चिंतन और निर्णय लेने को महत्व देते हुए यह सशक्तिकरण के मानदंडों को सूचीबद्ध करता है।"10

ग्रामीण परिवेश में स्त्री सशक्तिकरण आज भी एक चुनौती बनी हुई है, परिणामत: अनुभवी एवं योग्य ग्रामीण महिलाएं भी अधिकार संचेतना से वंचित रहती है। सशक्तिकरण के आधारभूत मानदंडों के आधार पर ग्रामीण महिलाओं की स्थिति योगदान एवं आगे बढ़ने की संभावनाओं का मूल्यांकन किए जाने पर यह स्पष्ट होता है कि, भारतीय समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा वर्तमान में भी घोर उपेक्षा का शिकार है और उन्हें सशक्त बनाना अनिवार्य राष्ट्रीय आवश्यकता है।

निष्कर्ष —

आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ा रही है। आज की नारी अपने कर्तव्यों को ग्रह कार्य की इतिश्री ही नहीं समझती है, अपितु अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग है। वह अब स्वयं के प्रति सचेत होते हुए अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने की हिम्मत रखती है। भारत सरकार राज्य सरकारें स्वयंसेवी संगठनों एवं महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों के प्रयासों और आधुनिक शिक्षा पद्धति एवं नई चिंतन शैलियों के के फलस्वरूप कामकाजी महिलाओं की स्थिति संघर्ष के बढ़ते प्रभाव से महिला सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़े हैं। महिला सशक्तिकरण से हमारा तात्पर्य महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता को समाहित करते हुए सामाजिक सेवाओं में समान अवसर प्रदान करना,राजनीतिक और आर्थिक नीति निर्धारण में भागीदारी समान कार्य के लिए समान वेतन कानून के तहत सुरक्षा देने का अधिकार आदि प्रदान करते हैं। इसके साथ ही ग्रामीण महिलाओं की स्थिति में भी सुधार देखा गया है। अतः समय आ गया है कि ' सशक्त नारी सशक्त भारत ' का सपना साकार करने के लिए यह आवश्यक है कि महिलाएं स्वयं प्रेरणा से संगठित होकर आत्मशक्ति के आधार पर सशक्तिकरण की नवीन परिकल्पना की सूत्रधार बने और लिंगभेद आधारित व्यवस्था को जड़ से समाप्त करें।

संदर्भ —

(1)भारत विकास की दिशा- अमर्त्य सेन- 2011- राजपाल एंड संन्स, दिल्ली - पृष्ठ 158

(2) पंचायती राज संस्थानों में महिलाओं की भूमिका: समस्या एवं समाधान- राधा कृष्ण- 2009 - भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका- पृष्ठ 444

(3) वही- पृष्ठ 445

(4) चिंतन परंपरा महिला उद्यमियों की पारिवारिक भूमिका- ऋतु सक्सैना, डॉ. प्रभा शर्मा, राधा कमल मुखर्जी- जून 2014- पृष्ठ 79

(5) मैन्स एण्ड वूमैन्स रोल इन इंडिया, वूमेन इन द न्यू एशिया- दुबे एस. सी.ई वार्ड पेरिस,यूनेस्को- 1963 - पृष्ठ 194 -95

(6) कला रानी - राधा कमल मुकर्जी -चिंतन परंपरा महिला उद्यमियों की पारिवारिक भूमिका एवं द्वंद्व- जून 2014 - पृष्ठ 79

(7) भारत विकास की दिशा- अमर्त्य सेन- 2011 राजपाल एंण्ड संन्स दिल्ली - पृष्ठ 178- 179

(8) चिंतन की अंन्तर्धाराएंँ और समकालीन हिंदी उपन्यास -श्रीधर प्रदीप - 2010- तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली - पृष्ठ 32

(9) भारत में नारी: राजनीतिक परिवर्तन- रंजना मिश्रा- 2013- कैलास पुस्तक सदन भोपाल- पृष्ठ 29

(10) वर्तमान पंचायती राज- वर्ष -3-अंक 6- देहरादून - मार्च 2002- पृष्ठ 14

(11) पाठक ममता- महिलाएं और विकास(दशा दिशा एवं संभावनाएं)रंजना मिश्रा द्वारा संपादित पुस्तक- भारत में नारी राजनीतिक परिवर्तन- कैलाश पुस्तक सदन भोपाल -2013 - पृष्ठ 140

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani